

लेखक-परिचय

फणीश्वरनाथ रेणु
(सन् 1921-1977)

प्रसिद्ध कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म गाँव औराही हिंगना (ज़िला पूर्णिया, बिहार) में हुआ और स्कूली शिक्षा नेपाल में। सन् 1942 के आज़ादी के आंदोलन के प्रमुख सेनानी रहे

रेणु ने नेपाल की सशस्त्र क्रांति और राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी की।

आंचलिक कथाकार के रूप में विख्यात रेणु ने ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसमय चित्र खींचा है। अपनी विशिष्ट भाषा-शैली द्वारा उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को नया आयाम दिया।

प्रमुख कृतियाँ—मैला आँचल, परती परिकथा, कितने चौराहे (उपन्यास); ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अगिनखोर (कहानी-संग्रह); ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रांति कथा (रिपोर्टाज)।

मृदुला गर्ग
(जन्म सन् 1938)

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर मृदुला गर्ग का जन्म कोलकाता में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. (अर्थशास्त्र) किया। भारत के विभिन्न शहरों में

रहने के बाद सन् 1974 से दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन। कथा-साहित्य के अलावा उन्होंने अपने समय और समाज की समस्याओं पर वैचारिक निबंध भी लिखे हैं। मृदुला गर्ग ने कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर गद्य-लेखन की प्रचलित परिपाटी को तोड़ा है।